आदरणीय शिक्षकगण,

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके त्याग और तप से ही एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शिक्षा के अधिकार कानून के लागू होने के बाद शिक्षा-क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी जन के दायित्व और भी बढ़ गए हैं। 6-14 आयु वर्ग के बच्चों का यह अधिकार है कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और इसे प्रदान करने के सभी उपादानों को संगठित, संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके से उन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

माँ-पिता के बाद बच्चों से सीधा संवाद यदि कोई स्थापित करता है, तो वह हैं आप शिक्षक। शिक्षक ही बच्चों का स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर उन्हें उनकी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने में प्रेरक का कार्य करते हैं।

बिहार की नयी पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। आप इस तथ्य से भली-भाँति अवगत होंगे। पाठ्यपुस्तक में संयोजित पाठ के उद्देश्य क्या हैं? उनसे गुजरकर बच्चों में कौन-से कौशल विकसित होंगे ? हम उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे करेंगे? शिक्षकों को इसकी स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। आपकी शैक्षिक ज़रूरतों, वर्ग-कक्ष में पाठ विनिमयन में आपको सहयोग करने के उद्देश्य से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका का निर्माण शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया है। यह प्रत्येक पाठ में उद्देश्य के साथ-साथ पाठ विनिमयन में की जाने वाली गतिविधियों के संयोजन एवं तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की रूप-रेखा तैयार करने में आपका सहयोग करेगी, ऐसी आशा है। प्रथम चरण में कक्षा I से V तक की हिन्दी एवं गणित विषय की शिक्षण सहयोग संदर्शिका का विकास यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से एस. सी.ई.आर.टी., पटना, बी.ई.पी. एवं बी.ई.क्यू.एम. के संयुक्त प्रयास से किया गया है। शेष संदर्शिकाओं का विकास प्रक्रियाधीन है।

आपसे अनुरोध है कि आप वर्ग विनिमयन और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में इस संदर्शिका की सहायता लें तथा इस संदर्शिका को और मूल्यवान बनाने हेतु हमें सुझाव दें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

(राहुल सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दिशाबोध

राहुल सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

हसन वारिस
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

मधुसूदन पासवान
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक एवं औपचारिक शिक्षा
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दीपक कुमार सिंह
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, नवाचारी शिक्षा,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना-सह-
कार्यक्रम प्रबंधक, बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

राजीव सिन्हा
प्रोग्राम मैनेजर, यूनिसेफ, पटना

डॉ. एस.ए.मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर (वैशाली)

अकादमिक संयोजक

डॉ. श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

नीरज दास गुरु
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

नलिन कुमार मिश्र
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

डा0 उदय कुमार उज्जवल
अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

भारत भूषण
विशेषज्ञ, शिक्षक-प्रशिक्षण
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

डा0 नरेश कुमार सिंह
विशेषज्ञ, अनुश्रवण एवं अकादमिक अनुसमर्थन
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

लेखन-सहयोग

जितेन्द्र कुमार, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, महमदा, परैया, गया, **कृत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, चंडासी, नूरसराय, नालंदा, **अरशद रज़ा,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा, रहुई, नालंदा, **अरविन्द कुमार,** साधनसेवी, प्रखंड-संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया, **विकास कुमार,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, बसकुटिया, चकाई, जमुई, **मनोज त्रिपाठी,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, फरना, बड़हरा, भोजपुर

समीक्षा एवं संशोधन-परिमार्जन

बिरेन्द्र सिंह रावत, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **संजय शर्मा,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **डॉ. राकेश सिंह,** शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली, **चन्दन श्रीवास्तव,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **कृष्णकांत ठाकुर,** पूर्व राज्य साधनसेवी, बी.ई.पी., पटना, **सुमन कुमार सिंह,** मध्य विद्यालय, कौड़िया बसंत, भगवानपुर हाट, सीवान, **मनीष रंजन,** प्राथमिक विद्यालय, मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना

शिक्षकों के लिए संदेश

पाठचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ-योजनाओं पर चर्चाएँ होती रही हैं। पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए पाठ-योजना की जरूरत पर भी बल दिया जाता रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए योजना की जरूरत होती है। प्रत्येक पाठ का एक उद्देश्य होता है। हर पाठ में बच्चों के लिए कुछ दक्षता निहित होती है। शिक्षक को उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए क्योंकि लक्ष्य का पता हो तो रास्ता ढूँढ़ना आसान होता है।

बिहार पाठचर्या की रूप-रेखा-2008 के अनुसार, ''बच्चे अनुभव के जरिए, कुछ बनाते और करते हुए, प्रयोग करते, पढ़ते, बहस करते, पूछते, सुनते, सोचते और जवाब देते हुए तथा खुद को वाणी, गतिविधि तथा लेखन के जरिए अभिव्यक्त करते हुए सीखते हैं।'' अतः सिखाने के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखा जाय। यह शिक्षण-संदर्शिका शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु है। इसमें प्रत्येक पाठ का उद्देश्य एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर किए जाने वाले क्रिया-कलापों की चर्चा की गयी है।

परंपरागत पढ़ाई में शिक्षक पूरे वर्ग से एक साथ बातचीत करते हैं जबकि बच्चे अलग-अलग दक्षता स्तर के होते हैं। ऐसे में कुछ बच्चे सीखते हैं, कुछ कम सीखते हैं, कुछ बहुत कम सीखते हैं। किसी विषय-वस्तु को पढ़ाने से पहले उसका संदर्भ बनाना या उसकी भूमिका बनाना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है कि यह बच्चों को वह संदर्भ उपलब्ध कराता है जिससे वे नये सिखाये या पढ़ाये जा रहे ज्ञान को अपने ज्ञान के मौजूदा स्तर से जोड़ते हुए आगे नया सीख पाएँ। बशर्ते यह काम ठीक से व बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाय। शिक्षकों को कुछ हद तक बच्चों को पाठ से जोड़ने वाली एक सार्थक बातचीत करना जरूरी है। कक्षा में पाठ की भूमिका बनाते हुए बोले गये वाक्य बच्चों के वश में न रहने वाले मन को विषय से जोड़ता है। परन्तु, हमारा उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होता, यहाँ समूह-कार्य की आवश्यकता महसूस होती है।

समूह में बच्चे अपने दोस्तों से सीखते हैं। एक दूसरे से ज्यादा खुलते हैं। हम बच्चों को आपस में बातचीत कर सीखने का मौका नहीं देते। शिक्षक का ऐसा मान लेना कि वही सिखाने वाले हैं, गलत है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा किसी शिक्षक के वनिस्पत हम उम्र साथियों से ज्यादा सीखता है। साथियों के साथ प्रश्न पूछने की आजादी तथा सरलता से तथा दोस्ताना माहौल में सीखने का मौका मिलता है। सहभागिता की भावना का विकास होता है। बच्चे वर्ग में शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों को जब समूह में एक दूसरे की सहायता से करते हैं तो समझ सुदृढ़ होती है।

सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर पाना ही सीखने की उपयोगिता है। बच्चे जब खुद करके सीखेंगे तो उनका आत्मबल बढ़ेगा, अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी और तभी सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर सकेंगे। अतः सिखाने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत कार्य आवश्यक हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से काम करने से बच्चा अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को प्रश्न करने का ज्यादा मौका दें। स्वाध्याय करने तथा मूल्यांकन दोनों ही कामों के लिए व्यक्तिगत कार्य किया जा सकता है। व्यक्तिगत कार्य की सफलता तभी है जब प्रत्येक बच्चे के द्वारा किये गये काम को जाँचा जा सके। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को दिये जाने वाले कार्य चुनौतीपूर्ण हों। यह चुनौती न बहुत आसान हो, और न बहुत कठिन। चुनौतियाँ बच्चों के उत्साह को बनाये रखती हैं तथा उत्साह सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करता है।

प्रत्येक शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चा वर्ग-कक्ष में दिये गये अभ्यासों को तथा पाठ्य-पुस्तक के अंत में दिये गये लिखित एवं मौखिक अभ्यासों को करे तथा उन अभ्यासों की जाँच पूरे धैर्य के साथ की जाए ताकि बच्चों को

अगर कोई कठिनाई हो तो वह कठिनाई दूर की जा सके। बच्चे पूर्ण रूप से सीखें हैं या नहीं इसके लिए शिक्षक पाठ की पुनरावृत्ति करें । बच्चों से पाठ संबंधित बातें करें, पूछें एवं यह जानने की कोशिश ही नहीं करें वल्कि अवश्य जानें कि सभी बच्चे सीख गए हैं। नहीं सीख पाये बच्चों की पहचान करें एवं उनका पुनर्बलन करें।

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित नयी पाठ्यपुस्तकें कुछ नया सोचने और करने को तथा खोजने को उत्प्रेरित करती हैं। अतः पाठों के अंत में दिए गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर सिर्फ उस पाठ से नहीं खोजे जा सकते वल्कि इन्हें खोजने व उत्तर पाने के लिए कई बार पाठ्यपुस्तक और स्कूल की परिधि से बाहर जाना होगा। पुरानी एवं नयी पाठ्यपुस्तकों में यह एक बड़ा फर्क है। ऐसे में शिक्षक-शिक्षिकाओं को नये नज़रिये के साथ इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में प्रत्येक गतिविधि समूह से, पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार, जोड़-घटा सकते हैं। आपने पंचतंत्र का नाम अवश्य सुना होगा। एक राजा को चिंता थी कि उसके राजकुमार पढ़ते नहीं हैं। कई गुरु बुलाये गये परन्तु वे सारे के सारे चंचल राजकुमार के सामने असफल साबित हुए। बाद में पंडित विष्णुशर्मा को बुलाया गया। उन्होंने राजकुमार को पोथियों से नहीं, बल्कि कहानियों से शिक्षा देनी शुरू की। उनके किस्सों में नीरसता नहीं थी और प्रत्येक कहानी के पीछे एक संदेश छिपा होता था। कल तक के उदंड राजकुमार अब इनमें रस लेने लगे और उस योग्यता को हासिल कर सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। इन्हीं कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' कहलाता है। आज भी ये कहानियाँ बच्चे सुनते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। ऐसा कहने का तात्पर्य है कि यह स्थापित हो गया है कि हमारी बुद्धि, हमारे अनुभव एवं सूझ-बूझ के इस्तेमाल करने का प्रतिफल है। कोई भी नई बात हम अपनी पूर्व जानकारी के बाद सीखते हैं। किसी भी वर्ग-कक्ष में बच्चों के सामान्य अनुभव पर आधारित बातचीत के आधार पर ही नयी जानकारी दें तथा ज्ञान के सृजन हेतु माहौल बनायें। बच्चों की सामान्य बुद्धि/अनुभव पर आधारित क्रिया-कलाप, बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक होंगे। हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़ने में अभिरुचि पैदा कराना होना चाहिए। इसलिए शिक्षक अपने बुद्धि-विवेक से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका में सुधार कर सकते हैं।

अतः शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में से गतिविधि आधारित बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते हुए पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार जोड़-घटा सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद अपना एवं बच्चों का मूल्याँकन जरूर करें। इसके आधार पर हर पाठ के बाद दी गई तालिका को भरना होगा। यह संदर्शिका केवल एक मार्गदर्शन है। अतः शिक्षकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी प्रगति-पत्रक का संधारण सुनिश्चित करने का निर्णय शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा लिया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कक्षावार-विषयवार पूरे वर्ष में प्रत्येक चार माह पर इस प्रगति-पत्रक को भरना अनिवार्य है। यह प्रगति-पत्रक प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक और सह-शैक्षिक उपलब्धियों का दर्पण होगा। अतः इस संदर्शिका में संबद्ध अंश भी दिया जा रहा है। अपेक्षा है कि मूल्यांकन की योजना बनाते समय आप इस प्रगति-पत्रक को अवश्य ध्यान में रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संयोजक दल

अनुक्रमणिका

कक्षा–V हिन्दी की पाठ्यपुस्तक : कोपल, भाग–

पाठ–संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ–संख्या
पाठ – 1	हिन्द देश के निवासी	1
पाठ – 2	टिपटिपवा	3
पाठ – 3	हुआ यूँ कि	5
पाठ – 4	चाँद का कुर्त्ता	7
पाठ – 5	म्यान का रंग	9
पाठ – 6	उपकार का बदला	11
पाठ – 7	चतुर चित्रकार	13
पाठ – 8	नन्कू	15
पाठ – 9	ममता की मूर्ति	17
पाठ – 10	आया बादल	19
पाठ – 11	एक पत्र की आत्मकथा	20
पाठ – 12	कविता का कमाल	22
पाठ – 13	कदम्ब का पेड़	24
पाठ – 14	दोहे	26
पाठ – 15	चिट्ठी आई है	27
पाठ – 16	मरता क्या न करता	28
पाठ – 17	बिना जड़ का पेड़	30
पाठ – 18	आज़ादी में जीवन	31
पाठ – 19	अंधेर नगरी	33
पाठ – 20	क्यों	35
पाठ – 21	ईद	37
पाठ – 22	परीक्षा	39
पाठ – 23	मिथिला चित्रकला	41

पाठ-1 : हिन्द देश के निवासी

उद्देश्य

- कविता के लय की समझ विकसित करना।
- कविता में निहित विचार, भावार्थ आदि को समझने की क्षमता विकसित करना।
- कविता बनाने/तुकबन्दी करने की क्षमता विकसित करना।
- पद्य को गद्य में अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- कविता पाठ का अभ्यास कराना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।
- स्वतंत्र रूप से लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- सारणी/तालिका के माध्यम से अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निदेश

- बच्चों को विभिन्न लोगों के रंग–रूप, वेश–भूषा, बोल–चाल, रीति–रिवाज इत्यादि में भिन्नता से जुड़े अनुभवों को सुनाने को कहें। तत्पश्चात् इन तमाम विभिन्नताओं के बावजूद समानता के बिन्दुओं को बच्चों को बतायें।
- मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर बच्चों को सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- कविता का भावार्थ बच्चों को बतायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गए कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। उन शब्दों के अर्थ अंदाज से बताने को कहें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।

समूह–कार्य

- संख्यानुसार बच्चों के समूह बनाकर उन्हें देशप्रेम, एकता, आपसी भाईचारा जैसी विषयवस्तुओं पर कविता बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को बनायी गयी कविता को सुनाने को कहें।
- पाठ में दिये गये 'आपका पन्ना' अन्तर्गत कार्यों/गतिविधियों को समूह में बातचीत करके करने को कहें।
- सारणी बनाकर लिखने को कहें कि कहाँ–कहाँ पर अनेकता के बीच एकता देखने को मिलती है।
- वर्ग को समूह में विभाजित कर प्रत्येक समूह को लय में कविता जागकर सुनाने के लिए कहे साथ ही कविता को विभिन्न रंगों में चार्ट पेपर पर लिखकर प्रदर्शित करने के लिए कहें।
- पूरी कविता को गद्य में लिखने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन पठन करने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्द को लिखने को कहें। शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़कर लिखने को कहें।

- कठिन शब्द के अर्थ जानने के बाद उनके श्रुतिलेख लिखवायें एवं प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाने को कहें। किये गये कार्य को जाँचें।
- कविता को गाकर सुनाने कहें।
- कविता का भावार्थ सुनाने कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को समवेत स्वर में कविता सुनाने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ पढ़ने को कहें।

क्र०	स्थान	अनेकता	एकता
1	विद्यालय	अलग–अलग छात्र एवं छात्राएँ	एक वर्ग
2	.....	.....	.....
3	.....	.....	.....

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कविता को लयपूर्वक पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता के भावार्थ को समझते हैं।	बच्चों की संख्या, जो तुकबन्दी कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता को गद्य में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सारणी बना सकते हैं।

पाठ - 2 : टिपटिपवा

उद्देश्य

- कहानी पढ़–सुनकर संदर्भ समझने की क्षमता विकसित करना।
- संवादों के भाव को समझकर पढ़ने एवं बोलने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों के अनुरूप पठन/वाचन की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।
- संज्ञा की समझ विकसित करना।
- मुहावरों से परिचय कराना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को बारिश से जुड़ी उनके अनुभवों को बताने को कहें।
- बच्चों को जंगली जानवरों यथा– बाघ, शेर, भालू, चीता, हाथी इत्यादि जानवरों से जुड़े अनुभव या जानकारी बताने को कहें।
- बच्चों को कहानी संक्षेप में सुनायें।
- मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर बच्चों को सुनायें एवं बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। उन शब्दों के अर्थ अंदाज से बताने को कहें। अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- कहानी में विभिन्न विराम चिह्नों को श्यामपट पर लिखें या उदाहरण सहित बच्चों को उनके उपयोग बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के पाँच समूह बनाकर उन्हें अलग–अलग पाँच जंगली जानवरों के बारे में लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से पहले उस जानवर की आवाज की नकल करने तत्पश्चात् प्रस्तुति करने को कहें।
- बच्चों के पाँच समूह बनाकर उन्हें अभ्यास में दिये गये मुहावरों के अर्थ पता करने को कहें। साथ ही, उन मुहावरों से क्या अभिप्राय है–इसपर बातचीत करने तथा पाँच–पाँच अन्य मुहावरे लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से प्रस्तुति करायें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- कहानी में आए संज्ञा शब्दों की सूची बनाने को कहें।
- ''भोला बाघ का कान पकड़कर उसे खींचता हुआ घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे अपना गदहा नजर आया।'' बच्चों के समूह बनाकर इस स्थिति पर बातचीत कर लिखने को कहें कि आगे क्या–क्या होगा। प्रत्येक समूह से बारी–बारी से प्रस्तुति कराएँ।

- समूह में पाठ से मुहावरों को खोजे तथा नए वाक्य बनवाएँ। अन्य काहनी किताबों से हर समूह को दस नए मुहावरों को खोज कर सूची बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन पठन करने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ जानने के बाद श्रुतिलेख लिखवाएँ एवं प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाने को कहें। बच्चों द्वारा किये गये कार्य को जाँचे।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा के दस उदाहरण लिखने को कहें।
- नये मुहावरों दें और उनसे वाक्य बनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस कहानी की घटनाओं को क्रमवार बताने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को पाठ का एक–एक अनुच्छेद हाव–भाव से पढ़ने के लिए कहें। उनसे एक–एक संवाद भी बोलने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो पढ़कर संदर्भ समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवाद या कहानी को विराम चिह्नों के अनुरूप पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़कर दूसरे के विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मुहावरों के अभिप्राय जानते हैं।		

पाठ-3 : हुआ यूँ कि.....

उद्देश्य

- गद्य पढ़–सुनकर संदर्भ समझने की क्षमता विकसित करना।
- संवादों के भाव को समझकर पढ़ने एवं बोलने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों के अनुरूप पठन/वाचन की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।
- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द/लगभग समान ध्वनि वाले शब्दों के बीच अन्तर को समझने की क्षमता विकसित करना।
- मुहावरों से परिचय कराना।
- कारक चिह्नों के प्रयोग की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को नाटक से जुड़े उनके अनुभवों को बताने को कहें।
- बच्चों को नाटक एवं सिनेमा के बीच के अन्तर पर बातचीत करायें। बच्चों से बातचीत को श्यामपट पर लिखवायें।
- बच्चों को पाठ संक्षेप में सुनायें।
- मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ संस्मरण को पढ़कर बच्चों को सुनायें एवं बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गए कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। शब्दों के अर्थ अंदाज से बताने को कहें। अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें नाटक एवं सिनेमा के बीच के अन्तर पर बातचीत कर लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से प्रस्तुति करायें।
- संख्यानुसार बच्चों के समूह बनाकर उन्हें श्रवण कुमार पर आधारित नाटक की तैयारी करायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को नाटक के मंचन/ प्रस्तुति का अवसर दें।
- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें अभ्यास में दिये गये मुहावरों के अर्थ पता करने को कहें। साथ ही उन्हें ''मुहावरा किसे कहते है ?'' विषय पर बातचीत करने तथा पाँच–पाँच अन्य मुहावरा लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से प्रस्तुति कराएँ।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें प्रत्येक कारक चिह्नों से युक्त दो–दो वाक्य लिखने को कहें। साथ ही उनमें एक ही वाक्य में अधिकाधिक कारक चिह्नों का उपयोग करने की प्रतियोगिता करायें।
- समूह बनाकर बच्चों को अभ्यास में दिये गये लगभग समान ध्वनि किन्तु भिन्न अर्थ वाले शब्द जोड़ियों के अतिरिक्त, पाँच अन्य शब्द–जोड़ियाँ बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन पठन करने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दो को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ जानने के बाद उन शब्दों के श्रुतिलेख लिखवायें एवं प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाने को कहें। बच्चों द्वारा किये गये कार्य को जाँचें।
- बच्चों को सिनेमा एवं नाटक के संवाद हाव–भाव के साथ बोलने को कहें।
- बच्चों को फिल्म या नाटक की कहानी सुनाने को कहें।
- शब्द दें, कारक चिह्नों को लगा कर वाक्य बनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस पाठ की घटनाओं को बताने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को पाठ का एक–एक अनुच्छेद हाव–भाव के साथ पढ़ाने के लिए अन्य बच्चों को कहें। साथ ही उन्हें सप्तम स्वर में गाया गया संवाद गाने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो पढ़कर संदर्भ समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवाद या कहानी को विराम चिह्नों के अनुरूप पढ़ सकते है।	बच्चों की संख्या, जो पढ़कर दूसरों के विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों के भावों को समझकर बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लगभग समान ध्वनि वाले शब्दो के बीच के अन्तर को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मुहावरा का अभिप्राय जानते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कारक चिह्नों के प्रयोग की समझ रखते हैं।

पाठ-4 : चाँद का कुर्ता

उद्देश्य

- कविता के लय की समझ विकसित करना।
- कविता में निहित विचार, भावार्थ आदि को समझने की क्षमता विकसित करना।
- कविता बनाने/तुकबन्दी करने की क्षमता विकसित करना।
- पद्य को गद्य में अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।
- प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से लिख सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को चाँद एवं उसके बढ़ते–घटते आकारों से संबंधित उनके अनुभव सुनाने को कहें।
- मानक उच्चारण लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर बच्चों को सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- कविता का भावार्थ बच्चों को बतायें।
- बच्चों द्वारा चुने गए कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखे। उन शब्दों के अर्थ अंदाज से बताने को कहें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें ''चाँद'' पर कविता बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को बनायी गयी कविता को सुनाने का अवसर दें। बनायी गयी कविता को गद्य में भी लिखने को कहें। समूह में किये गये कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें।
- सभी समूहों को चाँद के संबंध में (कुछ भी) लिखने के लिए कहें तथा प्रस्तुति कराएँ।
- उपर्युक्त गतिविधि माँ, हवा, रात, आसमान, भगवान, इत्यादि विषयवस्तुओं के साथ भी करें।
- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें पूरी कविता को गद्य में लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह की प्रस्तुति करायें। गद्य में भिन्नता की स्थिति में बच्चों को आम सहमति बनाने दें और सही दिशा में जाने में बच्चों की मदद करें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- कविता का मौन–पठन करने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ जानने के बाद उनके श्रुतिलेख लिखवाएँ एवं प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाने को कहें। बच्चों द्वारा किये गये कार्य को जाँचें।

- पूरी कविता को गद्य में लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को समवेत स्वर में कविता सुनाने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को कविता की चार–चार पंक्तियाँ लय एवं हाव–भाव के साथ पढ़ाने के लिए कहें।
- कुछ बच्चों को कविता का भावार्थ सुनाने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को लयपूर्वक पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता के भावार्थ समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता को गद्य में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।		

पाठ-5 : म्यान का रंग

उद्देश्य

- कहानी पढ़–सुनकर संदर्भ समझने की क्षमता विकसित करना।
- संवादों के भाव को समझकर पढ़ने एवं बोलने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों के अनुरूप पठन/वाचन की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- अन्य पुस्तकों को (साहित्य) पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।

शिक्षक–निर्देश

- बच्चों को राजा–रानी से जुड़ी कहानियाँ/जानकारियाँ सुनाने/बताने को कहें।
- बच्चों को कहानी संक्षेप में सुनायें।
- मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर बच्चों को सुनायें एवं बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। उन शब्दों के अर्थ अंदाज से बताने को कहें। शब्दकोश की सहायता से उनके अर्थ ढूँढने के लिए कहें।

सामूहिक कार्य

- बच्चों के समूह बना दें। कहानी को दस हिस्सों में बाँटकर प्रत्येक हिस्से के दो–दो महत्त्वपूर्ण वाक्य सभी समूहों को लिखवा दें। इसके बाद सभी समूहों को अपने शब्दों में कहानी पूरा करने को कहें।
- उपर्युक्त गतिविधि किसी दूसरी कहानी के साथ भी करें। कहानी विद्यालय पुस्तकालय से चुनी जा सकती है।
- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें इस कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को प्रस्तुति का अवसर दें।
- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें पाठ में दिये गये शब्द वर्ग–पहेली के जैसा–ही 'विद्यालय' से जुड़े शब्दों की वर्ग–पहेली बनाने को कहें। समूहों द्वारा बनायी गयी शब्द वर्ग–पहेली को परस्पर बदलकर उन्हें हल करने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- कहानी का मौन पठन करने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- बच्चों को कहानी की किताब पढ़ने के लिए उपलब्ध करायें।

- कठिन शब्दो के अर्थ जानने के बाद उन शब्दों के श्रुतिलेख लिखवाएँ एवं प्रत्येक शब्द से दो–दो वाक्य बनाने को कहें। बच्चों के द्वारा किये गये कार्य को जाँचें।
- पाठ में दिये गये शब्द वर्ग पहेली से शब्दों को खोजकर लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस कहानी की घटनाओं को क्रमवार बताने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को पाठ का एक–एक अनुच्छेद हाव–भाव के साथ अन्य बच्चों द्वारा पढ़वाने को कहें। उनसे एक–एक संवाद भी बोलने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कहानी को पढ़कर संदर्भ समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों भावों को समझकर बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी को विराम चिह्नों के अनुरूप पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़कर दूसरे के विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य पुस्तको/ कहानियों को पढ़ने में रुचि रखते हैं।		

पाठ - 6 : उपकार का बदला

उद्देश्य

- लिखित अभिव्यक्ति का विकास करना।
- अपने अनुभवों एवं विचारों को दूसरे के बीच सहजता से कह सकना।
- शब्दकोश देखने की समझ विकसित करना।

शिक्षक–निर्देश

- बच्चों के साथ टोले–मुहल्ले में घूमकर सामान बेचनेवाले (फेरी वाले) के बारे में चर्चा करें। बातचीत के बीच में ही पंखवाले के बारे में भी चर्चा करें।
- बंदर प्रायः घरों की छतों या मुड़ेरों पर बैठकर तरह–तरह के काम किया करते हैं। कभी–कभी लोग कुछ खाने को भी फेंक दिया करते हैं। गर्मी के दिनों प्रायः उन्हें नलकूपों या जल–स्रोतों पर पानी–पीते हुए देखा जाता है। बच्चों से इस तरह की चर्चा करते हुए कहानी की पृष्ठभूमि तैयार करें।
- अब, बच्चों को कहानी हाव–भाव से सुनाएँ। कहानी सुनाते समय आवाज बदल–बदल कर संवाद बोलें, बंदर की आवाज में सें–सें की आवाज निकालें तथा बच्चों से भी निकलवायें। ध्यान रहे संवाद में उतार–चढ़ाव (आवाज) प्रसंगानुकूल हो।
- बच्चों से पूछें–''कहानी कैसी लगी ?'' कारण भी जानने का प्रयास करें।
- अब कहानी को मानक उच्चारण के साथ पढ़ें। संवाद को रोचक बनाने हेतु पात्र एवं प्रसंग के अनुकूल संवाद बोले। यदि कहानी को वर्गकक्ष में घूम–घूम कर पढ़ें, तो यह ज्यादा प्रभावोत्पादक होगा।
- कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखने को कहें। बच्चे शब्द को पाठ में ढूँढें एवं वाक्य को पढ़ते हुए अर्थ का अनुमान लगायें।
- अनुमान से अर्थ निकाले गए कठिन शब्दों को शब्दकोश में ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें। शब्दकोश कैसे देखें के संबंध में निम्नांकित बातें बतायें।

- अ (अं, अँ अः), आ इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह यही शब्दकोश में अक्षरों क्रम है।
- क्ष, त्र और ज्ञ संयुक्त अक्षर हैं। 'क्ष' को 'क' के साथ 'त्र' को 'त' के साथ और 'ज्ञ' को 'ज' के साथ रखा जाता है।
- 'अ' का दूसरे अक्षरों के साथ क्रम इस प्रकार होगा – अं/अँ, अः अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड, अढ, अण, अत, अथ, अद, अध, अन, अप, अफ, अब, अभ, अम, अय, अर, अल, अव, अश, अष, अस एवं अह होगा।
- आदि अक्षर के साथ मात्राएँ लगने पर इनका क्रम होगा–का, कि, की, कु, कू, के, कै, को और कौ।
- मात्राओं के साथ संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होगा–क्क, क्ख, क्च, क्न, क्प, क्म, क्यू, क्र, क्ल, क्व, क्श, क्ष, क्स।
- उपर्युक्त जानकारियाँ स्वयं प्राप्त कर बच्चों को देने के बाद उनसे शब्दार्थ ढूँढ़वाएँ और आवश्यक मदद प्रदान करें। एक हीं शब्द के कई अर्थ होंगे। शिक्षार्थियों को संदर्भ के आलोक में शब्दार्थ चयन करने में मदद करें।

समूह–कार्य

- चार समूह बनायें। प्रत्येक समूह को चिंतन करने के लिए एक–एक परिस्थिति या चिंतन बिन्दु दें। ये बिंदु इस तरह के भी हो सकते हैं –
  1. जब सोमन का एक भी पंखा नहीं बिका, तो उसके मन में कौन–कौन सी बातें आयी होगी ?
  2. जब सोमन ने बन्दर को खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया, तो बन्दर ने क्या–क्या सोचा होगा ?

3 जब बंदर सोमन के दो पंखों को लेकर भागा तो सोमन ने क्या–क्या सोचा होगा ?

4 जब बंदर ने दोनों पंखों को फेंककर पपीता तोड़ा होगा तो भद्र पुरूष के मन में कौन–कौन सी बातें आयी होंगी?

(इस तरह के अन्य बिन्दुओं या परिस्थितियों को आप स्वंय निर्धारित कर सकते हैं। वर्ग में छात्रों की संख्या अधिक होने पर समूहों की संख्या बढ़ाकर नयी परिस्थितियाँ दे सकते है।) समूह में उभरे विचारों को चार्ट पेपर/कॉपी पर लिखकर वर्ग में बारी–बारी से प्रत्येक समूह की प्रस्तुति कराएँ।

- शब्दकोश की पाँच–छह प्रतियाँ वर्ग में रखें। चार या पाँच समूहों में प्रत्येक को एक–एक शब्दकोश उपलब्ध करायें। प्रत्येक समूह पाठ से पाँच–पाँच कठिन शब्दों को ढूँढ़े। पहला समूह दूसरे से, दूसरा तीसरे सें, तीसरा चौथे से और चौथा पहले समूह से बारी–बारी एक–एक कठिन शब्द का अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़ने को कहें। समूह शब्द का अर्थ, एवं शब्दकोश की पृष्ठ–संख्या भी बताएँगे जहाँ वह शब्द एवं उसका अर्थ लिखा हुआ है। शब्दार्थ ढूँढ़ने और उसके लिए समय आवंटित करने सहित खेल के अन्य नियम भी आप स्वयं बनाएँगे। समूह को शब्दार्थ पता करने हेतु पूरा अवसर प्रदान करें।
- पुनः वर्ग को चार समूहों में बाँटें। बन्दर लोभी था या ईमानदार, दोनों शीर्षकों पर सभी समूह तथ्यों/साक्ष्यों के साथ अपना विचार रखे। संकोची स्वभाव के बच्चों को अवसर ज्यादा प्रदान करें। इसी तरह के अन्य शीर्षकों का चयन कर गतिविधि को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पाठ के अन्त में दिये अभ्यासों का हल समूहवार करायें। अभ्यासों के हल की जाँच अवश्य करें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को हाव–भाव के साथ पढ़ने का अवसर प्रदान करें। (तरीका मनोरंजक हो।)
- कठिन शब्दों के अर्थ जिन्हें बच्चों ने ढूँढ़ा है, उन शब्दों से वाक्य बनवायें।
- पूर्व की गतिविधि जिसमें परिस्थिति पर चिंतन का अवसर दिया गया था , जिस समूह के जो विद्यार्थी हों, उनके लिखित विचार लें।
- पाठ में आये मुहावरों से वाक्य बनवायें।

पुनरावृत्ति

- विभिन्न गतिविधियों पर आये बच्चों के विचार को समेकित करें।
- पाठ से संबंधित प्रश्नावली (वस्तुनिष्ठ या एक–दो पंक्ति में दिये जानेवाले उत्तर) तैयार कर बच्चों से पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो लिखकर अभिव्यक्ति कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनें अनुभवों एवं विचारों को वर्ग में सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जिन्हें शब्दकोश देखने की समझ है।

पाठ - 7 : चतुर चित्रकार

उद्देश्य

- कविता को समझते हुए पढ़ना।
- कविता के सस्वर गायन हेतु प्रेरित करना।
- 'प्रत्यय' लगाकर शब्द–निर्माण की समझ विकसित करना।
- घटनाओं का मानक भाषा में वर्णन कर सकना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से जानवरों के बारे में बातचीत करें। पूर्व ज्ञान के आधार पर शेर के बारे में भी बातचीत करें।
- चित्र और चित्रकार के बारे में भी बातचीत करें। बातचीत को विषय–वस्तु से जोड़े।
- कविता का सस्वर मानक उच्चारण के साथ गायन करें।
- बच्चों से भी कविता पाठ करवाएँ।
- बच्चों से समवेत स्वर में कविता के लिए प्रेरित करें।
- प्रत्येक शिक्षार्थी को बारी–बारी से कविता पाठ करवाएँ।
- कविता में आये कठिन शब्दों को बच्चों से श्यामपट पर लिखवाएँ। कठिन शब्द के अर्थ का अनुमान लगाने का अवसर प्रदान करें। पुनः इनके शब्दार्थ शब्दकोश में ढूँढ़ने का अवसर प्रदान करें।

समूह–कार्य

- वर्ग को चार समूहों में बाँटें। यदि बच्चों की संख्या अधिक हो तो समूह–संख्या में यथा आवश्यक वृद्धि कर लें।
- प्रत्येक समूह को कविता का सरल अर्थ लिखने को कहें। बड़े समूह में प्रस्तुति करायें। ध्यान रहे, कविता के सरल अर्थ का वाचन खंड–खंड में कई बच्चों द्वारा हो।
- पुनः समूह बनाएँ। समूहवार कविता में से कठिन शब्दों का चयन कराएँ। पहला समूह दूसरा से और दूसरा तीसरे से (इसी तरह अन्य समूह दूसरे से) कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़ने के लिए कहेंगे। उत्तरदाता समूह शब्दार्थ एवं शब्दकोश की पृष्ठ संख्या भी बताएँगे। जब तक पाठ के सभी कठिन शब्दों के अर्थ न मिल जायें तब तक गतिविधि जारी रखेंगे।
- कठिन शब्दों से वाक्य बनवायें।
- बच्चों को प्रत्यय के बारे में आवश्यक जानकारी देते हुए समझ विकसित करें।

> **कुछ प्रमुख प्रत्यय निम्नलिखित हैं :–**
> भाई, अनीय, उक्कड़, आलु, ई, उन, आऊ, वाला, ता, पन, वान, मंद, आ, ईला, आना, इक, इका, इत, इन, तर, तम, त्व, आना, आनी, इत्यादि।

- समूह का निर्माण कर प्रत्येक समूह में बराबर–बराबर प्रत्यय देकर अधिकाधिक शब्द–निर्माण करायें। शब्द–निर्माण चार्ट पेपर पर हो और कक्षा में प्रदर्शित।
- समूहवार बड़े समूह में प्रस्तुति करायें। दूसरे समूह द्वारा बताए गए शब्दों को भी सभी समूहों द्वारा निर्मित सूची चार्ट पेपर में स्थान दें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल समूहवार करायें। यथा आवश्यक समूह को मदद प्रदान करें।

व्यक्तिगत कार्य

- प्रत्येक बच्चा कविता को बारी–बारी से सस्वर पढ़े इसका अवसर दें।

- कविता की पंक्तियाँ याद (स्मरण से) कर लिखने के लिए कहें।
- कविता की घटनाओं का वर्णन मानक भाषा में करायें।
- प्रत्यय लगाकर बनाये गये नये शब्दों से वाक्य बनवायें।
- कविता को गद्य मे लिखने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख करवायें।

पुनरावृत्ति

- कविता को एकल एवं समवेत स्वर में सुनें।
- पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों से जानें।
- प्रत्यय की समझ एवं इससे शब्द–निर्माण को परखें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जिन्होंने शब्दकोश को देखना सीख लिया हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रत्यय से शब्द बना सकतें हैं।	बच्चों की संख्या, जो घटनाओं का वर्णन मानक भाषा में कर सकते हैं।

पाठ - 8 : नन्कू

उद्देश्य

- पढ़ने में मानक उच्चारण के साथ–साथ पठन–गति में तीव्रता लाना।
- सरल विषयों पर अनुच्छेद लिखने की समझ/क्षमता विकसित करना।
- लिखने में विराम–चिह्नों के प्रयोग की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बाढ़ के बारे में बातचीत करें। बाढ़ क्या है, इसके आने के कारण क्या हैं, इससे जान–माल की कितनी क्षति होती है, कभी आपने बाढ़ का सामना किया है इत्यादि पर चर्चा करते हुए बच्चों को मूल पाठ पर लायें।
- पूरी कहानी को स्मरण से हाव–भाव के साथ सुना दें। फिर कहानी पर चर्चा करें। कोशिश करें कि बच्चे ये बताने की स्थिति में हों कि उन्हें कहानी कैसी लगी।
- अब पाठ को मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पढ़ें। पात्रों के संवाद को निश्चित रूप से प्रसंगानुकूल उतार–चढ़ाव के साथ बोलें।
- बच्चों से भी कहानी अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहें।
- मानक उच्चारण एवं हावभाव के साथ बच्चों से कहानी पढ़ने कहें।
- पाठ के अन्त में दिये गये अभ्यास–कार्यो के हल के बाद कहानी के पात्रों पर बच्चों के विचार आमंत्रित करें। कोशिश करें पचास–साठ शब्दों में उनके विचार लिखित आ जायें।
- लेखन–प्रक्रिया में विराम चिह्नों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मात्र एक विराम चिह्न वाक्य के अर्थ को बदल देता है, जैसे–''पकड़ो, मत जाने दो।'' और ''पकड़ो मत, जाने दो।'' अतः पहले इन्हें स्वयं स्मरण करें एवं समझें, फिर बच्चों को समझाते हुए उनका प्रयोग बच्चों से कराएँ। अन्य विराम चिह्नों की भी जानकारी दें।

समूह–कार्य

- छात्र–संख्या को ध्यान में रखते हुए समूह बनायें। समूह–संख्या एक के कोई प्रतिभागी पाठ को पढ़ना शुरू करेंगे। शेष सभी समूह के प्रतिभागी भी सतर्क होकर पाठदाता के साथ मन ही मन पाठ वाचन करेंगे। जैसे ही समूह एक का प्रतिभागी पढ़ना बंद कर किसी दूसरे समूह की संख्या या नाम बोले तत्क्षण उस दल का प्रतिभागी वहीं से पढ़ना शुरू करें जहाँ पहले प्रतिभागी ने छोड़ा था।
- उच्चारण दोष की स्थिति में शिक्षक और बच्चे पाठदाता को मदद प्रदान करते रहेंगे। समूह का नामकरण एक, दो तीन ..... या साहित्यकारों (दिनकर, प्रेमचंद, तुलसी इत्यादि) के नाम पर भी किया जा सकता है। इस गतिविधि को तब तक कराएँ जब तक सभी प्रतिभागी इसमें शामिल न हो जाएँ। गतिविधि को मनोरंजक बनाने हेतु इसके कुछ नियम भी बना सकते हैं, जो बच्चों को चुनौतीपूर्ण तो लगे साथ हीं मनोरंजक भी हो, जैसे तीसरी बार नन्कू शब्द आने पर पाठदाता रुक जायेंगे और दूसरे को मौका देंगे, इत्यादि।
- अब प्रत्येक समूह को कहानी का एक–एक पात्र दें। समूह के प्रतिभागी चार्टपेपर पर उस पात्र के संबंध में अपने विचार लिखें तथा बड़े समूह में प्रस्तुति कर वर्गकक्ष में टाँग दें। पात्र होंगे–नन्कू, ननकू की बहन, ननकू के दादाजी, जवाहर चाचा, इत्यादि।

- विराम चिह्नों से संबंधित आवश्यक जानकारी यदि दे दी गयी हो एवं बच्चों की समझ बन गयी हो तो निम्न गतिविधि करायें–समूह–निर्माण पुनः करें। प्रत्येक समूह को पाँच या छः पंक्तियों का अनुच्छेद या कोई लिखित सामग्री दें जिसमें किसी भी तरह के विराम चिह्नों का कोई प्रयोग नहीं किया गया है। समूह आपसी समझ से लिखित सामग्री में विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए; बड़े समूह में प्रस्तुति करें। प्रस्तुति के दौरान यथा आवश्यक सहयोग प्रदान करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़ें।
- पाठान्त में दिये गये अभ्यास–प्रश्नों का हल समूहवार करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- सभी बच्चों को मौन वाचन का अवसर प्रदान करें।
- प्रत्येक बच्चे से उसकी अपनी भाषा में कहानी लिखवायें।
- कठिन शब्दों के श्रुतिलेख करायें। शब्दों से वाक्य बनावायें ताकि कठिन शब्दों को छात्र सहज रूप में समझ सकें। अशुद्ध लिखे गये शब्दों के शुद्ध रूप पाठ्यपुस्तक में ढूँढकर सही–सही लिखने के लिए कहें।
- निम्न घटनाओं पर बच्चों के व्यक्तिगत विचार लिखवाएँ –
  – बाढ़ का दृश्य
  – छप्पर का पानी में बहना
  – पुल पर रस्सी फेंकना

पुनरावृत्ति

- कहानी को बच्चों से टुकड़े–टुकड़े में सुनें।
- कहानी से संबंधित प्रश्न बच्चों से बनवायें।
- बच्चों के बनाए प्रश्नों को समेकित करते हुए वर्ग में क्वीज करायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो मानक उच्चारण के साथ पाठ को पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सरल अनुच्छेद लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विराम चिह्नों का प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ - 9 : ममता की मूर्ति

उद्देश्य

- शब्दों और वाक्यों को अर्थ ग्रहण (समझ) के साथ पढ़ना।
- सरल विषयों पर अनुच्छेद लिखना।
- उपसर्ग एवं इनके संयोग से शब्द बनाने की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- कोई स्थानीय महिला या पुरुष (जीवित या मृत) जिनका व्यक्तित्व समाज के लिए अनुकरणीय हो; से संबंधित जानकारी प्राप्त कर वर्गकक्ष में चर्चा करें।
- यदि इस तरह का कोई उदाहरण न मिले तो महापुरुषों से संबंधित प्रेरक–प्रसंग जिसका संबंध दया एवं त्याग से हो, बच्चों को सुनायें।
- स्मरण से पाठ में वर्णित कुछ प्रेरक–प्रसंगों को बच्चों को बतायें।
- मानक उच्चारण के साथ पाठ–वाचन करें। बीच–बीच में बच्चों की तरफ देखते भी रहें इससे बच्चें सक्रिय रहेंगे।
- बच्चों को भी पाठ–वाचन का अवसर प्रदान करें।
- 'उपसर्ग' के बारे में अपनी समझ को पुष्ट करते हुए पाठ में आये शब्दों – असहाय, बेसहारा, लावारिस इत्यादि के माध्यम से बच्चों को उपसर्ग की जानकारी देते हुए शब्द–निर्माण की समझ विकसित करें।

समूह–कार्य

- वर्ग को समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह से निम्न कथनों पर लिखित विचार आमंत्रित करें –
  - नहीं–नहीं गंदे कहकर इनका अपमान मत कीजिए। ये बहुत पवित्र हैं। इन्हें तो मैं अपने सर पर रखना चाहता हूँ।
  - गरीबों, असहायों, रोगियों को देखकर इनका दिल सेवा के लिए मचलता रहता था।
  - नीली किरानी वाली सफेद साड़ी सेवा भाव रखने वाली नर्सो की पहचान बन गयी।
  - आपको विश्व में जहाँ कहीं भी दुखी, रोगी, बेसहारा, असहाय लोग मिलें, वे आपका प्यार पाने के हकदार हैं।

  समूह–संख्या बढ़ने की स्थिति में आप पाठ के आधार पर नये कथन दे सकते हैं या इन्हीं कथनों की पुनरावृत्ति कर सकते हैं। समूहवार प्रस्तुति कराएँ। अन्य समूहों को अपने विचार भी जहाँ आवश्यक हो, देने हेतु प्रेरित करें।
- पुनः समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह पाठ से दस–दस शब्दों का चयन करेंगे। इसके पश्चात् शब्दों की सूची पहला समूह दूसरे को और दूसरा तीसरे को इत्यादि दे देंगे। प्रत्येक समूह से इन शब्दों से वाक्य बनवाएँ। कोशिश करें कि समूह वाक्य इस प्रकार बनाए कि वह अनुच्छेद का रूप ले ले। यदि बच्चे ऐसा नहीं कर पाते हैं तो किसी, एक समूह की सूची लेकर आप ऐसा करने में बच्चों की मदद कर दें और शेष समूहों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें।
- पुनः नया समूह बनाएँ। सभी समूह पचास–साठ शब्दों में इन शीर्षकों पर जो कुछ चाहें लिख सकते है –
  - ममता की मूर्ति – पर कविता।
  - मदर टेरेसा – पर कहानी।।
  - मदर टेरेसा का सेवा–भाव – पर चिट्ठी।
  - मिशनरी ऑफ चैरिटीज – पर नारा।
  - सम्मान या पुरस्कार – पर लेख।

  (यहाँ जो कुछ लिखने का तात्पर्य भाषा की विधा से है, जैसे–कविता, कहानी, एकांकी, लेख इत्यादि।)

- समूह बनाएँ। प्रत्येक समूह को दस–दस उपसर्गों की सूची उपलब्ध कराएँ। समूहवार सूची देते समय उपसर्गों की पुनरावृत्ति भी हो जाए। प्रत्येक समूह उपसर्गो से अधिकतम शब्दों का निर्माण कर वर्गकक्ष में टाँग दें। नये उपसर्गों के साथ कई बार इस गतिविधि को करा सकते हैं।
- अभ्यास के प्रश्नो का हल समूहवार करायें। यथा आवश्यक मदद प्रदान करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ के लिए पूर्व की प्रक्रिया या आपके मन में कोई नवाचार है तो उससे मदद लेते हुए हुए, अर्थ ढूँढ़वायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठवाचन कराएँ। वाचन के क्रम में विरामचिह्नों ठहराव (। , ; , ;) का ध्यान रखने कहें। प्रयास करें 'श' और 'स' तथा 'र' और 'ड़' का उच्चारण–अन्तर वाचन में दिखें। इसके लिए बहुत दबाव न दें, केवल प्रयास करें।
- 'मदर टेरेसा' पाठ को संक्षेप में लिखवायें तथा इसकी जाँच भी करें।
- पाठ–आधारित प्रश्नों की सूची बनवायें।

पुनरावृत्ति

- पाठ का सारांश बच्चों द्वारा वर्ग में सुनाया जाय।
- व्यक्तिगत कार्य में बनाये गये पाठ आधारित प्रश्नों की सूची से क्वीज करायें।
- उपसर्ग एवं प्रत्यय को मिलाते हुए श्यामपट पर लिखें। निर्देश दें कि पहले उपसर्ग एवं प्रत्यय को अलग–अलग करें फिर इनके सहयोग से शब्दों का निर्माण करें।

बच्चों ने क्या–क्या कितना सीखा			
बच्चों की संख्या, जो शब्दों एवं वाक्यों को समझते हुए पढ़ते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वाक्यों के अर्थ/भाव को समझते हैं।	बच्चों की संख्या, जो छोटे–छोटे अनुच्छेद लिख लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो उपसर्ग एवं प्रत्यय के संयोग से शब्द बना लेते हैं।

पाठ - 10 : आया बादल

उद्देश्य

- अपनी बात को सही ढंग से रखने की क्षमता विकसित करना।
- मजे के लिए पढ़ने / गाने की आदत विकसित करना।
- चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से भिन्न–भिन्न मौसमों के बारे में बातचीत करें। कौन–सा मौसम किसे प्यारा है, यह भी जानें। प्रिय होने का कारण भी जानें।
- हर मौसम की अपनी अलग–अलग खूबियाँ है, इस पर बच्चों से बातचीत करें। जैसे ही बरसात के मौसम की खूबियों की बात हो, इस कविता का सस्वर वाचन करें।
- बच्चों से एक साथ / एकल स्वर में कविता पढ़ने कहें।
- यह पाठ बच्चों के मजे के लिए है। अतः मनोरंजक गतिविधियों का निर्माण करें।
- इस पाठ या पूर्व के किसी पाठ की छवि जो बच्चों के मन में बैठ गयी है उसे चित्र के द्वारा व्यक्त करने का अवसर दें।

समूह–कार्य

- वर्ग को समूहों में विभक्त करें। एक बच्चे को अलग कर लें। यह बच्चा स्रोत व्यक्ति होगा। प्रत्येक समूह को चार–चार पंक्तियाँ आवंटित करें। अलग किये गये बच्चे को ऊपरी तीन पंक्तियों दें। सभी समूह आंवटित चार पंक्तियों को कण्ठस्थ कर लें। अब इन्हें मंचन हेतु आवश्यक निर्देश दें। पहले अलग किया गया बच्चा हाव–भाव के साथ उमड़–घुमड़ कर आसमान में ..... आया–बादल, आया बादल को तीन, चार बार दुहराएगा ? इसी बीच पहला समूह ''देखो–देखो काला बादल ..... को मस्ती में झूमते हुए हाव–भाव के साथ गाता आएगा। बारी–बारी से सभी समूह अपनी–अपनी पंक्तियों के साथ आएँगे। 'आया बादल; आया बादल' को सभी बच्चे हर समूह के साथ समवेत स्वर में गायेंगे। अन्तः में सभी समूह एक साथ ऊपर की तीन पंक्तियों को झूम–झूम कर गाएँगे। यदि पूरी कविता बच्चे याद कर लें तो एक साथ प्रस्तुति करा लें।
- सभी समूहों को बादल, बरसात, बरसात में की जानेवाली खेती या उन्हें जो कुछ पसंद हो का चित्र बनाने के लिए कहें। चित्र चार्ट पेपर पर बनवाएँ एवं वर्गकक्ष में प्रदर्शित करें।
- पुनः समूह–निर्माण करें। इस बार उन्हें पूर्व के पाठों का स्मरण दिलाएँ। संभव है बच्चों के मन में इन पाठों का कोई दृश्य रच–बस गया हो, उन्हें इनका चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें। कुछ बच्चे ऐसे भी होंगे जो अपनी अनुभूति को प्रकट नहीं कर सकें। उनसे बात कर कोई भी चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चो को कविता कंठस्थ करने कहें।
- कविता का सस्वर वाचन करें।
- पूरी कविता को गद्य में लिखवायें।
- अभ्यास के सवाल हल करायें।

पुनरावृत्ति

- जब सभी–बच्चों को कविता याद हो जाए, तो इसे सभी बच्चों को एक साथ प्रस्तुति का मौका दें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो समूह में प्रस्तुति कर सकते है।	बच्चों की संख्या, जो समवेत स्वर में गायन सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अभिव्यक्ति को चित्र के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

पाठ - 11 : एक पत्र की आत्मकथा

उद्देश्य

- किसी भी वस्तु/प्रक्रिया का सूक्ष्म अवलोकन करने की दृष्टि विकसित करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त करने की समझ विकसित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- विशेषण/सर्वनाम आदि के उपयोग की समझ विकसित करना।
- निबंध की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक पत्र से जुड़े अनुभव पूछें एवं निबंध के स्वरूप पर चर्चा करें।
- शिक्षक पाठ को संक्षेप में बतायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण के साथ पाठ पढ़कर सुनायें एवं बच्चों से वाचन करायें।
- बच्चों को अपनी आत्मकथा लिखने के लिए कहें।

समूह–कार्य

- छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर समूह के प्रत्येक छात्र को बारी–बारी सें पाठ का वाचन करने को कहें। अन्य समूह वाले ध्यान से सुनें एवं यदि उच्चारण–दोष हो तो उसे बतायें। यह क्रिया सभी समूह के साथ करायें।
- सभी छात्रों को दो समूहों में बाँट दें। दोनो समूह पूरे पाठ को ध्यान से पढ़कर अलग–अलग प्रश्न और उसके संभावित उत्तर तैयार करें। बाद में एक समूह दूसरे समूह से प्रश्न पूछें। दूसरे समूह के सदस्य उनका उत्तर बताएँ। यही क्रिया बारी–बारी से दोनों समूहों से करायें।
- छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर पाठ से कठिन शब्द चुनने कहें एवं समूहवार शब्द की प्रस्तुति करायें तथा अन्य समूह से उनके अर्थ बताने को कहें।
- समूह में अलग–अलग विषय देकर उसकी आत्मकथा लिखने कहें, जैसे–गाँव, बरसात की रात, नदी, विद्यालय, मंदिर इत्यादि।
- समूह में अभ्यास के प्रश्नों के हल करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन ही मन पढ़ने को कहें।
- दिये गये अनुच्छेद में से सर्वनाम/विशेषण/संज्ञावाले शब्दों को चुनने कहें।
- कहानी में से विशेषण और सर्वनाम शब्दों की सूची बनवायें।

- समूह में अखबार दें और बच्चों से संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दों की सूची बनवायें।
- पाठ में दिये गये अभ्यास कार्य करायें।
- पत्र की तरह अपनी आत्मकथा लिखने को कहें।
- पत्र जब पेटी में बाकी पत्रों से मिला तो पत्रों के उनके बीच क्या बातचीत हुई होगी। कल्पना कर संवाद लिखने को कहें।
- पाठ में आये शब्दों का श्रुतिलेख करवायें। उसके शुद्ध स्वरूप पाठ्यपुस्तक से ढूँढ़कर ठीक–ठीक लिखने कहें।

पुनरावृत्ति

- अपनी आत्मकथा लिखने कहें तथा इसकी जाँच करें।
- सर्वनाम और विशेषण के उदाहरण देने को कहें।
- श्यामपट पर विशेषण एवं सर्वनाम शब्द एक साथ लिख दें। इन्हें सर्वनाम एवं विशेषण के रूप में पहचानने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो किसी भी विषय पर स्वयं कुछ लिख सकते है।	बच्चों की संख्या, जो विशेषण शब्द को पहचान सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम शब्द को पहचान सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कठिन शब्द सुनकर उनके अर्थ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो छोटे निबंध लिख सकते है।

पाठ-12 : कविता का कमाल (कहानी)

उद्देश्य

- शब्द–भंडार में वृद्धि करना।
- कहानी लिखने / पढ़ने की शैली से परिचित कराना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- विरामचिह्न के उपयोग की क्षमता का विकास करना।
- रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- मुहावरों के उपयोग की समझ विकसित करना।
- वाक्य में प्रयुक्त काल को पहचानने की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक कहानी का सार संक्षेप सुनायें।
- मानक उच्चारण के साथ कहानी का वाचन करें एवं छात्रों से भी करायें।
- कठिन शब्दों को ढूँढने कहें तथा शब्दकोष से उसका अर्थ पता करने कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें। समूह के प्रत्येक छात्र को एक–एक अनुच्छेद पढ़ने को कहें। समूह के अन्य बच्चे उच्चारण–दोष बताने का काम करेंगे। यही क्रिया सभी समूहों के साथ की जाय।
- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर कहानी को ध्यान से पढ़ने कहें एवं उसमें आये कठिन शब्दों की सूची बनवाकर प्रस्तुत करायें, अन्य समूहवाले उनके अर्थ बतायें।
- समूह को पाठ पर आधारित प्रश्न एवं उनके संभावित उत्तर लिखने को कहें तथा समूहवार प्रस्तुति करायें।
- बच्चों को समूह में बाँटकर कहानी के मंचन के लिए आवश्यक पात्रों एवं सामग्रियों की सूची बनाने को कहें एवं प्रस्तुति करायें।
- कहानी का समूह में मंचन करायें।
- बच्चों को समूह में बाँटकर पहले एक समूह को पाठ्यपुस्तक से वर्त्तमान काल, दूसरे समूह को भूतकाल एवं तीसरे समूह को भविष्यत् काल वाले पाँच–पाँच वाक्य लिखने को कहें।
- विभिन्न समूहों में विभक्त कर प्रत्येक समूह को पाठ के वैसे वाक्यों की सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करने कहें जिनमें अलग–अलग चिह्नों का प्रयोग हुआ हो।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों को कहानी का मौन पठन करने कहें।
- बच्चों को कहानी को संक्षेप में लिखकर सुनाने को कहें।
- बच्चों को कहानी का घटना–क्रम बताने को कहें।
- कहानी का कोई अनुच्छेद देकर उनमें विराम चिह्नों का प्रयोग करने को कहें।
- बच्चों को पाठ में आए विशेषण शब्दों को चुनकर लिखने को कहें।

- बच्चों से श्रुतिलेख लिखवाएँ तथा पाठ्यपुस्तक से उसका मिलान कर शब्दों को शुद्ध करने के लिए कहें।
- बच्चों को कुछ शब्द दें, जैसे–खेल, पढ़ना, सोना, हँसना इत्यादि। इससे तीनों काल में वाक्य बनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को कहानी संक्षेप में सुनाने को कहें।
- पाठ पर आधारित प्रश्न पूछें।
- श्यामपट पर तीनों काल से संबंधित कई वाक्य लिखकर बच्चों से 'काल' की पहचान करने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो कहानी को संक्षेप में सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी के पात्रों के बारे में राय दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मुहावरों की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विशेषण की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विराम चिह्नों का प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ-13 : कदम्ब का पेड़

उद्देश्य

- कविता के प्रति रुचि व प्रेम उत्पन्न करना एवं आनंद लेने की क्षमता विकसित करना।
- कविता में निहित भावों को समझना तथा उन्हें शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
- छात्रों की सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि करना।
- क्रिया शब्दों की पहचानने की क्षमता का विकास करना।
- प्रश्नों के मौखिक/लिखित जवाब देने की क्षमता विकसित करना।
- अपने से कविता लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- कठिन शब्दों को सुनकर लिखने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- पेड़ से होनेवाले फायदों के बारे में बच्चों से बातचीत करें।
- पेड़ों की घट रही संख्या का क्या–क्या प्रभाव पड़ेगा। इस पर भी चर्चा करें।
- कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों से वाचन करायें।
- कविता में आये कठिन शब्दों की पहचान करायें तथा उनके अर्थ शब्दकोश से ढूँढवाये।
- बच्चों से कविता का अर्थ पूछें और आवश्यकतानुसार बतायें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल करायें।
- क्रिया शब्दों को ढूँढवायें तथा क्रिया के बारे में बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर क्रमशः सामूहिक रूप से समूहवार एक–एक अनुच्छेद का गायन करवायें।
- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में दिये गये अनुच्छेद में से कठिन शब्द को पहचानकर उसके अर्थ अनुमान के आधार पर लिखने कहें एवं समूहवार प्रस्तुति करायें। आवश्यकतानुसार मदद करें।
- छोटे–छोटे समूहों में दिये गये अनुच्छेद का सरलार्थ लिखनें को कहें एवं समूह के किसी छात्र/छात्रा से प्रस्तुति करायें।
- बच्चों को छोटे समूहों में बाँटकर किसी समूह को क्रिया वाले शब्द, किसी समूह को संज्ञा वाले शब्द, किसी समूह को विशेषण वाले शब्द, किसी को उपसर्ग ढूँढ़ने को कहें एवं समूहवार प्रस्तुति करायें।
- बच्चों को दो समूहों में बाँट दें। एक समूह कविता की कोई पंक्ति बोलेगा। दूसरा समूह कविता की कोई अन्य पंक्ति बोलेगा। दोनों समूह उन पंक्तियों को गद्य के रूप में लिखकर सुनायेंगे।
- बच्चों को समूह में चर्चा कर बताने को कहें कि कविता की कौन–कौन सी पंक्तियाँ आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों?
- अभ्यास के प्रश्नों के हल समूह में करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों को कविता का मौन पठन करने को कहें।
- कविता के अंत में दिये गये अभ्यास को हल करने कहें एवं आवश्यकतानुसार मदद करें।
- बच्चों को वर्ग–पहेली में से खाने की चीजें ढूँढ़ने को कहें।
- बच्चों को अपने आस–पास के पेड़ों के नाम तथा उनके उपयोग लिखने को कहें।
- बच्चों को पेड़ो से होनेवाले फायदे के बारे में लिखने को कहें।
- माँ से जुड़े अनुभवों को लिखने कहें।
- कठिन शब्दो का श्रुतिलेख करायें।
- बच्चों को कविता को कहानी के रूप में सुनाने के लिए कहें।
- श्रीकृष्ण से जुड़ी अन्य कविताएँ ढूँढ़कर लाने एवं कक्षा में सुनाने को कहें।
- बच्चों को बतानें को कहें कि अपनी माँ को खुश करने के लिए आप कौन–कौन से काम करते हैं।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता सस्वर सुनें।
- बच्चों को कविता का भावार्थ बताने को कहें।
- बच्चों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों को पाठ्यपुस्तक से बताने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कविता का सस्वर गायन कर सकते है।	बच्चों की संख्या, जो कविता में आये कठिन शब्दों के अर्थ बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता का सरलार्थ बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया शब्दों को समझते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ से पूछे से गये प्रश्न का जवाब दे सकते हैं।

पाठ-14 : दोहे

उद्देश्य

- दोहे को लय के साथ गाने की क्षमता को विकसित करना।
- दोहे के भावों को समझना तथा उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- दोहे का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों से करायें।
- दोहे का शब्दार्थ एवं भावार्थ बतायें।
- कठिन शब्दों के अर्थ बतायें।
- विद्यालय पुस्तकालय में उपलब्ध दोहे की किताब बच्चों को पढ़ने के लिए दें।

समूह–कार्य

- बच्चों को छोटे समूहों में बाँटकर एक–दो दोहों का सस्वर वाचन करायें।
- बच्चों को दो समूहों में बाँटकर दोहे पर आधारित अंत्याक्षरी करवायें।
- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर प्रत्येक समूह को एक–दो दोहे देकर उनमें कठिन शब्द चुनने को कहें एवं अनुमान से उनके अर्थ बताने को कहें। उन शब्दों से वाक्य बनवायें।
- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर एक–दो दोहे का सरलार्थ लिखने को कहें एवं बारी–बारी से प्रस्तुति करायें।
- बच्चों को समूहों में बाँटकर रहीम, कबीर एवं तुलसीदास के दोहों को अलग–अलग लिखने को कहें एवं कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- समूह में किसी वैसी घटना के बारे में लिखने को कहें जब समय पर काम नहीं करने के कारण नुकसान हुआ हो ?

व्यक्तिगत कार्य

- दोहे का मौन पठन करने को कहें।
- दिये गये दोहों में से कठिन शब्दों की पहचान करने को कहें एवं अनुमान से उनके अर्थ लिखने को कहें। इसके बाद उनका मिलान शब्दकोश में लिखे अर्थ से करने कहें।
- पाठ में दिये गये अभ्यास–प्रश्न को हल करने को कहें।
- वर्षा के बहुत ज्यादा या कम होने से होनेवाले फायदे और नुकसान को लिखने को कहें।
- बच्चों से विलोम शब्द / शब्द का वाक्य में प्रयोग / समानार्थक शब्द से संबंधित अभ्यास करायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को दोहे को सुनाने के लिए कहें।
- पाठ आधारित प्रश्न पूछें।
- दोहा देकर उसका अर्थ बताने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो दोहे का सस्वर वाचन कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कठिन शब्दों के अर्थ बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दोहे का अर्थ बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो समानार्थकशब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विलोम शब्द का वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ-15 : चिट्ठी आई है।

उद्देश्य

- किसी विषय से जुड़े अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- पत्र लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- कारक के चिह्नों की समझ विकसित करना।

शिक्षक–निर्देश

- शिक्षक पाठ का मानक उच्चारण कर पठन करें एवं छात्रों से पठन करायें।
- शिक्षक /शिक्षिका छठ पर्व के बारे में बच्चों से बात करें।
- संभव हो तो शिक्षक छठ पर्व पर आधारित कोई गीत खुद सुनायें एवं बच्चों से सुनें। गाँवों से जुड़े लोकगीत एवं त्योहारों से जुड़े गीत को भी बच्चों से सुनें।
- बच्चों को कारक के चिह्नों एवं उसके उपयोग की जानकारी दें।
- शिक्षक छात्रों से पूछें क्या आपने कभी अपने मित्र को पत्र लिखा हैं ? उसमें क्या–क्या लिखा था ?

समूह–कार्य

- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर प्रत्येक समूह को कोई त्योहार जो उन्हें अच्छा लगता है, उसके बारे चर्चा कर बताने को कहें।
- बच्चों को समूह में बाँटकर उन्हें छठ, शादी एवं धान रोपने के समय गाये जाने वाले गीतों को गाने की तैयारी करायें तथा प्रस्तुति करायें।
- बच्चों को समूह बनाकर विभिन्न त्योहारों की सूची एवं उन त्योहारों में बननेवाले पकवानों की सूची बनाने को कहें।
- बच्चों को चार समूहों में बाँटें पहले समूह को ''छठ क्यों मनाया जाता है'' विषय वस्तु पर तथा दूसरे समूह को ''उन दिनों क्या–क्या किया जाता है'', तीसरे समूह को ''घाट पर जाने के लिए क्या–क्या तैयारियाँ की जाती हैं'' एवं चौथे समूह को ''प्रसाद में उपयोग में लायी जानेवाली चीजो की सूची'' बनाने को कहें। समूहवार प्रस्तुति करायें।
- विभिन्न समूहों के विविध चिह्नों से बने वाक्यों की सूची बनावायें एवं कक्षा में प्रदर्शित करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों से अपने पसंद के पर्व के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखने के लिए कहें।
- मोबाइल और चिट्ठी के द्वारा अपनी बात बताने में क्या अंतर होता है ? लिखकर बताने के लिए कहें।
- बच्चों को छठ पर्व में कौन–सी बात सबसे अच्छी लगती है और क्यों ? लिखकर बताने के लिए कहें।
- एक लिफाफा बनवाये एवं उस पर भेजने वाले एवं पाने वाले से जुड़ी जानकारी लिखने के लिए कहें।
- छठ पर्व पर गाये जाने वाले कुछ गीतों को लिखवायें और अपने साथियों को सुनाने कहें।
- पाठ में दिये गये अभ्यास–प्रश्नों को हल करने के लिए कहें एवं आवश्यकता पड़ने पर मदद करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को छठ के बारें में बताने को कहें।
- बच्चों को किसी भी विषय पर बोलने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो पत्र लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ में दिये गये अभ्यास हल कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कारक चिह्नों का सही प्रयोग कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कठिन शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।

पाठ - 16 : मरता क्या न करता

उद्देश्य

- धाराप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- पढ़ी या सुनी हुई बात को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- मुहावरों एवं उनके अर्थ से परिचित करना।
- कठिन शब्दों के अर्थ तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- सर्वप्रथम पूरे पाठ को स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़कर सुनायें।
- लोककथा का सारांश हावभाव के साथ अपने शब्दों में सुनायें ।
- बारी–बारी से सभी बच्चों से कथा का एक–एक अनुच्छेद पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को पाठ से ढूँढ़कर उनका अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़ने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख करायें।
- अभ्यास में दिये गये प्रश्न एवं मुहावरों का पर्याप्त अभ्यास करायें।
- बच्चों को अपनी भाषा में यह लोककथा सुनाने के लिए कहें।

समूह–कार्य

- प्रत्येक समूह के सभी सदस्यों को मिलकर कहानी को संवाद के रूप में पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
- सभी समूहों को अपने क्षेत्र की प्रचलित कोई लोककथा लिखने तथा उसे अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहें।
- पाठ में आये कठिन शब्दों का शब्दार्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़कर लिखने के लिए कहें।
- शुद्धता से शब्द लिखने की प्रतियोगिता बच्चों से करायें। प्रत्येक समूह को दस–दस शब्द श्यामपट पर सुनकर लिखने के लिए कहें। शब्दों का चयन दूसरे समूह के बच्चे करें। सबसे ज्यादा शुद्ध शब्द लिखने वाले समूह के लिए तालियाँ बजवायें।
- शरीर के अंगों के नाम से जुड़े मुहावरों को सभी समूहों को लिखने एवं उनसे वाक्य बनाकर सुनाने के लिए कहें। ज्यादा मुहावरे बनानेवाले समूह को विजेता घोषित करें।

व्यक्तिगत कार्य

- प्रत्येक सदस्य को कहानी का मौन पठन करने को कहें।
- कहानी के किसी एक पात्र के बारे में बताने के लिए कहें वह कैसा था ? उसने क्या किया ? उसका व्यवहार कैसा था, इत्यादि।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करायें।
- बच्चों से कहानी का सार–संक्षेप लिखने एवं पढ़कर सुनाने को कहें।
- 'दालभात में मूसल' शीर्षक के अंतर्गत दिये गये मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करायें।
- आस–पास में रहने वाले लोगों में किसकी क्या–क्या आदते हैं ? बच्चों को सुनाने कहें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख करायें एवं इसकी जाँच करें।
- कहानी के घटनाक्रम को क्रमशः सुनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- कुछ बच्चों से लोककहानी उनके शब्दों में सुनें।
- कुछ बच्चों को स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोककथाओं को सुनाने कहें।
- बच्चों से मुहावरों के अर्थ पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो बेझिझक अपनी बात कह सकते हैं।	बच्चो की संख्या, जो धाराप्रवाह कहानी कह सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी को अपने शब्दों में लिख सकते हैं।	बच्चो की संख्या, जो स्थानीय स्तर पर प्रचलित कहानी अपने शब्दों में सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मुहावरों का सही वाक्य प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ - 17 : बिना जड़ का पेंड़

उद्देश्य

- कल्पनाशीलता का विकास करना।
- धाराप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- किसी कहानी को अपने शब्दों में सुना सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- स्वयं पूरे पाठ को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से पाठ पढ़कर सुनाने को कहें।
- बच्चों को अपने शब्दों में पाठ को अपनी याददाश्त से सुनायें।
- बच्चों से पूरी कहानी अपने शब्दों में सुनाने को कहें।
- अपनी कल्पना से बच्चों को कोई नयी कहानी सुनायें।
- अपने आस–पास उपलब्ध बड़े बुजुर्गों से कक्षा में कहानी सुनाने के लिए कहें।
- विद्यालय–पुस्तकालय में उपलब्ध लोककथाओं की किताब से कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाने को कहें।
- 'चल पढ़ कुछ बन' अखबार में छपी 'दादी नानी की गप्प' शीर्षक के अंतर्गत दी गई कहानी को पढ़कर सुनाने कहें।

समूह–कार्य

- प्रत्येक समूह को पूरी कहानी हावभाव के साथ सुनाने को कहें। इसके लिए प्रतिभागियों को पाँच या छह दलों में विभक्त करें। इस बात का ध्यान रखें कि कहानी सुनाने में समूह के सभी सदस्यों की सहभागिता हो।
- बच्चों को समूह में मिलकर कोई नयी कहानी बनाने के लिए कहें।
- प्रत्येक समूह द्वारा बनायी कहानी को दूसरे दल के सदस्यों के द्वारा हावभाव के साथ प्रस्तुत करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- कहानी को बोल–बोलकर पढ़ने को कहें।
- कहानी का मौन पठन करायें।
- किसी नयी कहानी का निर्माण कर सुनाने को कहें।
- आस–पास में उपलब्ध बीरबल, गोनू झा, देवन मिश्र आदि की चतुराई संबंधी कहानी इकट्ठा कर सुनाने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- कक्षा के कम बोलनेवाले बच्चों को आगे आकर ''बिना जड़ का पेड़'' कहानी का सारांश सुनाने के लिए कहें।
- बच्चों को बोल–बोलकर कहानी पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कहानी को धाराप्रवाह पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी कल्पना से कहानी बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी का सार–संक्षेप सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्थानीय स्तर पर प्रचलित किस्सों को सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पुस्तकालय से कहानी की किताब लेकर पढ़ते हैं।

पाठ - 18 : आज़ादी में जीवन

उद्देश्य

- कविता को लयात्मक ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करना।
- बच्चों में पशु–पक्षियों के प्रति संवेदना का भाव जागृत करना।
- कविता निर्माण की ओर उन्मुख करना।
- वचन की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- कविता को उचित लय एवं हावभाव के साथ स्वयं पढ़कर सुनायें।
- कविता को सभी बच्चों को अलग–अलग लय में सुनाने को कहें।
- कविता का भावार्थ बच्चों को बतायें।
- पृथ्वी एवं पशुओं के साथ किये जाने वाले अमानवीय व्यवहार के संबंध में बच्चों के विचार को सुनें।
- 'आज़ादी के महत्त्व' के संबंध में बच्चों के विचारों को सुनें।

समूह–कार्य

- कक्षा के बच्चों को आवश्यकतानुसार कई समूहों में बाँटकर समूह गान के रूप में कविता को प्रस्तुत करायें।
- पुस्तकालय से कविता की अलग–अलग पुस्तक प्रत्येक समूह को देकर नयी कविताओं की प्रस्तुति करायें।
- पाठ्यपुस्तक में एक वचन में आये शब्दों की सूची बनवाकर उसका वचन परिवर्तन करने के लिए कहें।
- विभिन्न समूहों में कविता हू–ब–हू देखकर चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करने के लिए कहें।
- कुछ विषय–वस्तु, यथा–फूल, फल, चिड़ियाँ आदि, अलग–अलग समूह में देकर कविता बनवायें।
- कविता के अलग–अलग अनुच्छेद पाँच समूहों को आवंटित करें तथा क्रमशः प्रत्येक समूह को कविता का अनुच्छेद गाकर सुनाने के लिए कहें।
- पशु–पक्षियों के साथ कैसा व्यवहार होता है, बच्चों को लिखने के लिए कहें तथा समूह में उसकी प्रस्तुति करायें।
- समूह में अभ्यास के प्रश्नों को हल करने के लिए कहें एवं उसकी जाँच करें।

व्यक्तिगत कार्य

- प्रत्येक बच्चे से कविता का मौन पठन करने के लिए कहें।
- 'आज़ादी क्यों अच्छी लगती है' के संबंध में अपने विचार लिखने के लिए कहें।
- अगर किसी बच्चे को एक कमरे में बंद कर दिया जाए, तो उसे कैसा लगेगा ? विचार को लिखने के बाद बोलकर सुनाने के लिए कहें।
- सभी बच्चों को कविता की कोई चार पंक्तियाँ अलग–अलग लय में सुनाने कहें।
- कविता में, आये पशु–पक्षियों के चित्र बनवायें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल करायें तथा उसकी जाँच करें।
- शब्द देकर उनके वचन में परिवर्तन करायें।
- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के वचन–परिवर्तन करवायें।

पुनरावृत्ति

- कुछ बच्चों को 'आज़ादी में जीवन' कविता गाकर सुनाने के लिए कहें।
- कुछ बहुवचनों एवं कुछ एक वचनवाले शब्दों को देकर उसका वचन परिवर्तित करने के लिए कहें।
- आज़ादी क्यों आवश्यक है, से संबंधित बच्चों के विचार सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता का गायन लय के साथ करते हैं।	बच्चों की संख्या, जो नई कविता का निर्माण कर लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने विचारों को बेझिझक व्यक्त करते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वचन की पहचान कर लेते हैं।

पाठ - 19 : अंधेर नगरी

उद्देश्य

- संवादों को समझकर पढ़ने की क्षमता का संवर्द्धन करना।
- संवादों को सुनकर उसका अर्थ समझने की क्षमता का विकास करना।
- एकांकी के बारे में कुछ पंक्तियाँ बताने की क्षमता को विकसित करना।
- हावभाव के साथ संवाद पढ़ने एवं बोलने की क्षमता का विकास करना।
- विभिन्न शब्दों के उच्चारण ठीक–ठीक करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- सर्वप्रथम एकांकी को कहानी के रूप में बच्चों को बतायें।
- अलग–अलग पात्रों के संवाद अलग–अलग बच्चों से पढ़वायें।
- एकांकी की वर्गकक्ष में प्रस्तुति करायें। इसके लिए बच्चों का चयन अलग–अलग पात्रों के रूप में करें तथा एकांकी की प्रस्तुति विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में करायें।
- शेष बच्चों का एकांकी के संबंध में विचार जाने, जैसे–उन्हें एकांकी कैसी लगी ? सबसे अच्छा अभिनय किसने किया ? सबसे अच्छे संवाद किसके लगे, इत्यादि।
- पाठ में आये कठिन शब्दों का अनुलेख करायें तथा इसका अर्थ शब्दकोश की सहायता से खोजने के लिए कहें।
- अभ्यास में दिये शब्दों का उच्चारण करायें।
- दो बच्चों को किसी खास मुद्दे पर बातचीत करने के लिए कहें, जैसे–प्रार्थना, सभा आदि।

समूह कार्य

- कक्षा को कई समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह को एकांकी के पात्रों के संवाद पढ़कर (प्रत्येक छात्र अलग–अलग पात्र) सुनाने के लिए कहें।
- प्रत्येक समूह को वर्गकक्ष में एकांकी को पूरी तैयारी के साथ प्रदर्शित करने के लिए कहें।
- विद्यालय–पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों में से एकांकी का चयन कर उसकी प्रस्तुति करने के लिए कहें।
- प्रत्येक समूह को कठिन शब्दों को देखकर लिखने (अनुलेख) कहें तथा कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- अभ्यास–कार्य का हल समूह में चर्चा कर करने के लिए कहें।
- समूह में समानार्थी शब्दों को खोजने के लिए कहें।
- आपके पड़ोस या बाजार में बिकने वाली सामग्रियों की लिखित सूची बनवाकर कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- समूह में एकांकी के प्रत्येक पात्र का संवाद अलग–अलग आवाज में पढ़ने के लिए कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- एकांकी को हावभाव के साथ पढ़ने कहें।
- पाठ का अभ्यास हल करायें।
- किसी एक पात्र के सभी संवाद क्रमशः पढ़ने के लिए कहें।
- किसी एक संवाद को हावभाव के साथ बोलकर सुनाने कहें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख लिखवायें एवं पुस्तक से मिलाकर उसकी जाँच करने के लिए कहें।

- कुछ समान अर्थ वाले शब्दो को लिखने को कहें।
- 'अंधेर नगरी' एकांकी की किसी एक घटना को अपने शब्दों में लिखने एवं सुनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- कुछ बच्चों को बताने को कहें–एकांकी में सबसे पहले क्या हुआ ? उसके बाद क्या हुआ ? इसी प्रकार सभी बच्चों को एकांकी की एक–एक बात क्रमशः बताते हुए एकांकी पूरी करने को कहें।
- कुछ शब्द देकर उसके समानार्थी शब्द बताने को कहें।
- एकांकी का संवाद कुछ बच्चों से बोलवायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो हावभाव के साथ एकांकी पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो हाव भाव के साथ संवाद बोल लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो एकांकी की घटना को अपने शब्दों में लिख लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो समानार्थी शब्दों को पहचान सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास में 'इ' के उच्चारण वाले शब्दों को ठीक–ठीक पढ़ लेते हैं।

पाठ - 20 : क्यों

उद्देश्य

- कविता को लय एवं हावभाव के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों को चिंतन की ओर उन्मुख करना।

शिक्षण–निर्देश

- स्वयं पूरी कविता को हावभाव एवं लय के साथ पढ़कर सुनायें।
- बच्चों को कविता की चार–चार पंक्तियाँ पढ़कर क्रमशः सुनाने के लिए कहें।
- बच्चों को पूरी कविता लय के साथ पढ़ने के लिए कहें।
- पूरी कक्षा के बच्चों को क्रमशः बिना रुके एक पंक्ति पढ़ने कहें, जैसे–पहला बच्चा पहली पंक्ति, दूसरा बच्चा दूसरी पंक्ति। इसी प्रकार सभी बच्चों की सहभागिता (एक पंक्ति गाना) से पूरी कविता गवायें।
- कविता में आये विभिन्न शब्दों से संबंधित बच्चों के अनुभवों को सुनें, जैसे–हाथी, फल, पहलवान, साँप, ढोल, इत्यादि।
- प्रश्नवाचक वाक्यों के उच्चारण सिखायें।

समूह–कार्य

- कक्षा को विभिन्न समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह से कविता का समवेत स्वर में गायन करायें।
- कक्षा को पाँच समूहों में विभाजित करें। प्रत्येक समूह को कविता की पाँच पंक्तियाँ देकर उनकी हावभाव के साथ प्रस्तुति करायें। पुनः सभी समूह की सहभागिता से पूरी कविता की प्रस्तुति करायें।
- विभिन्न समूहों को पाठ में आये वाक्यों की तरह क्यों वाले अन्य प्रश्न बनाने के लिए कहें एवं प्रस्तुति करायें।
- कविता में आये कुछ शब्दों को विभिन्न समूहों में देकर उनसे जुड़े अनुभवों को लिखित रूप से प्रस्तुत करने कहें।
- पूरी कविता विभिन्न रंगों से लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- विभिन्न समूहों में क्यों से प्रारंभ होने वाले बच्चों के मन में उभरे सवालों का निर्माण करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- कविता की पाँच पंक्तियाँ देखकर लिखने तथा कक्षा में सभी बच्चों को दिखाने के लिए कहें।
- बच्चों से इसी तरह की कविता की चार पंक्तियाँ स्वयं सोचकर लिखने कहें।
- विराम चिह्न का ध्यान रखकर कविता पढ़कर सुनाने कहें।
- कविता में आये शब्दों का श्रुतिलेख करायें एवं उसकी जाँच बच्चों से आपस में करायें।
- अभ्यास 'बूझो तो जाने' आदि का हल करायें।
- कविता से जुड़े क्यों वाले सवालों को लिखने कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुनाने कहें।
- कुछ बच्चों के दिमाग में अगर इसी तरह के क्यों वाले प्रश्न हों, तो उन्हें बताने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता लय एवं ठीक–ठीक उच्चारण के साथ पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो एकांकी के रूप में इसे प्रस्तुत करने में सहभागिता रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्या वाले प्रश्न बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विभिन्न विषयों पर अपने अनुभवों को बता सकते हैं।

पाठ - 21 : ईद

उद्देश्य

- धाराप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- पाठ को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- वाक्य–प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- पूरे पाठ को मानक उच्चारण और हाव–भाव के साथ पढ़कर सुनायें।
- कहानी का सारांश अपने शब्दों में सुनायें।
- प्रत्येक छात्र से पाठ का एक–एक अनुच्छेद पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को चिन्हित करायें और श्यामपट पर लिखें उसके अर्थ शब्दकोश से ढूँढने कहें।
- अभ्यास में दिये गये प्रश्नों एवं गतिविधियों को करायें।
- चर्चा करें कि जब कोई हमारी मदद करता है तो मददकर्त्ता हमें कैसा लगता है और क्यों।

समूह–कार्य

- प्रत्येक समूह के सभी सदस्यों को मिलकर कहानी को संवाद के रूप में पढ़कर सुनाने कहें।
- एकांकी के रूप में पाठ का मंचन समूहवार करायें।
- प्रत्येक समूह को कहानी में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया की पहचान कर सूची बनाने कहें। समूहवार प्रस्तुति करायें।
- ईद के दिन होनेवाली गतिविधियों/रमजान महीने की गतिविधियों को समूहवार प्रस्तुत करने कहें।
- प्रत्येक समूह को पाठ के अलग–अलग पात्रों द्वारा कहे गए वाक्यों को चिह्नित करने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- प्रत्येक छात्र से कहानी का मौन पठन करायें।
- कहानी के किसी एक पात्र के बारे में लिखने कहें।
- कहानी को संक्षेप में लिखने कहें।
- कहानी में 'असलम' की जगह वे होते तो क्या करते, बताने कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल करवायें एवं जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- कुछ छात्रों से ऐसी कोई घटना सुनाने कहें।
- छात्रों को पाठ का सारांश बताने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो बेझिझक अपनी बात कह सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो धाराप्रवाह कहानी पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी को अपने शब्दों में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी घटना को सुना सकते हैं।

पाठ - 22 : परीक्षा

उद्देश्य

- धाराप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- पाठ को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- भावार्थ को समझने की क्षमता विकसित करना।
- पर्यायवाची शब्दों की जानकारी देना।

शिक्षण–निर्देश

- पूरे पाठ को मानक उच्चारण और हाव–भाव के साथ पढ़कर सुनायें।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में सुनायें।
- प्रत्येक छात्र से पाठ के अनुच्छेद पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को छात्रों से चिन्हित करायें एवं श्यामपट पर उनके अर्थ लिखवायें।
- अभ्यास में दिये गये अभ्यास एवं गतिविधियों को करायें।
- पर्यायवाची शब्दों के संबंध में बतायें।

समूह–कार्य

- प्रत्येक समूह के सभी सदस्यों को कहानी को संवाद के रूप में पढ़कर सुनाने को कहें।
- एकांकी के रूप में पाठ का मंचन समूहवार करायें।
- समूहवार पाठ में आए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और उन शब्दों को चिन्हित करायें जिनमें 'र' का प्रयोग हुआ हो।
- समूहवार गुरुओं, वैद्यों के कार्यो को पहचान करके प्रस्तुत करने कहें।
- पाठ में आये शब्दों के पर्यायवाची शब्द समूह में शब्दकोश की सहायता से ढूँढने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- प्रत्येक छात्र से कहानी का मौन पठन करायें।
- प्रत्येक छात्र से कहानी का सारांश लिखवायें।
- प्रत्येक छात्र को ऐसी ही किसी कहानी / घटना लिखने को कहें।
- प्रत्येक छात्र से चर्चा करें कि वे होते तो क्या करते और क्यों ?

पुनरावृत्ति

- छात्रों से पाठ का सार–संक्षेप सुनें।
- बच्चों से पाठ को बारी–बारी से अपने शब्दों में सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो बेझिझक अपनी बात कह सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो धाराप्रवाह कहानी पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी को अपने शब्दों में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विभिन्न प्रकार के 'र' की पहचान कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों को पहचान सकते हैं।

पाठ - 23 : मिथिला-चित्रकला

उद्देश्य

- धाराप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- पाठ को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- किसी भी विषय पर अपनी बात लिखित रूप से व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- पूरे पाठ को मानक उच्चारण और हाव–भाव के साथ पढ़कर सुनायें।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में सुनायें।
- प्रत्येक छात्र से पाठ के अनुच्छेद पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को छात्रों से चिन्हित करायें एवं उनके अर्थ श्यामपट पर लिखकर शब्दों से वाक्य बनवायें।
- पाठ से जुड़े छोटे–छोटे प्रश्न पूछें, जैसे–चित्रकला कितने तरह की होती है? चित्र में क्या–क्या दृश्य दिखाई पड़ते है? ऐसी चित्रकला कहाँ देखने को मिलती है आदि।
- अरिपन और भित्तिचित्र को शिक्षण अधिगम सामग्री (T.L.M) की मदद से स्पष्ट करें।

समूह–कार्य

- समूहवार पाठ में आये संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया शब्दों को चिन्हित कराकर प्रस्तुति करायें।
- समूहवार पाठ के महत्त्वपूर्ण अंशों को चिन्हित करने के लिए कहें।
- समूहवार बिहार के नक्शे में उन जिलों को चिन्हित करने को कहें जहाँ मधुबनी चित्रकला का प्रचलन है।
- संग्रहालय या मिथिलांचल का अनुभव/ऐसी ही किसी चित्रकला के बारें में बातचीत करने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।
- पाठ का सारांश लिखने कहें।
- पाठ में दिये गये चित्रों की अनुकृति बनाने कहें।
- पाठ में वर्णित पशु–पक्षियों, देवी–देवताओं के चित्र बनाने कहें।
- समूह में रंगोली, अरिपन, बनाने कहें। स्थानीय परिवेश में शादी–ब्याह, पर्व–त्योहारों में बनाये जाने वाले चित्रों के बारे में बताने कहें।
- पाठ में आये महत्त्वपूर्ण स्थान, व्यक्तियों के नामों को बताने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से किसी विषय पर अपने विचार लिखित एवं मौखिक रूप से बताने कहें।
- बच्चों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया से संबंधित प्रश्न पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो बेझिझक अपनी बात कह सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो धाराप्रवाह पाठ को समझकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ को अपने शब्दों में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण की पहचान कर सकते हैं।

सीखने के बिन्दु	पहला सत्र	दूसरा सत्र	तीसरा सत्र
कविता/कहानी/घटना को हाव-भाव के साथ सुनाता है।			
परिचित संदर्भ में बातचीत करता है।			
घटना को व्यवस्थित क्रम से बताता है।			
घटना के बारे में प्रतिक्रिया देता है।			
उचित विराम चिह्नों के साथ पढ़ लेता है।			
व्याकरण का प्रयोग करता है।			
चार-पाँच पंक्तियों को सुनकर लिख लेता है।			
कविता का अर्थ जानता है एवं लिख लेता है।			
कविता/कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करता है।			
पत्रिका एवं समाचार पत्र को समझते हुए पढ़ लेता है।			
उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए लिख लेता है।			
वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, मंचीय कार्यक्रमों में भाग लेता है।			